झारखंड की समरगाथा

शैलेन्द्र महतो

झारखंड की समरगाथा

झारखंड आंदोलन का जीवन्त दस्तावेज

शैलेन्द्र महतो – 'झारखंड का व्यास'

'झारखंड की समरगाथा' जरूर पढ़ें। झारखंड का असली दर्द समझ में आ जायेगा। शैलेन्द्र महतो (पूर्व सांसद) ने बड़े मनोयोग से लिखा है। इसकी प्रस्तावना डॉ. रामदयाल मुंडा ने लिखी है।

शैलेन्द्र महतो से मेरा पुराना सम्पर्क है। 1972-73 में हम दोनों एन. ई. होरो की झारखंड पार्टी से जुड़े थे। धीरे-धीरे तीव्र होते झारखंड के मुक्ति संघर्ष में हम दोनों ने अपना रास्ता बनाया। जल-जंगल, जमीन आंदोलन के रास्ते वे 1978 में झारखंड मुक्ति मोर्चा में शामिल हुए। मैं झारखंड पार्टी के रास्ते श्री वीर भारत तलवार के साथ झारखंड की सांस्कृतिक मुक्ति के सवालों से जूझने लगा। हाल में जब 'झारखंड की समरगाथा' का प्रकाशन हुआ तब मुझे अपने पुराने मित्र की बौद्धिक उपलब्धि का एहसास हुआ। वैसे 1989 में दैनिक 'प्रभात खबर' ने इनके 'झारखंड राज्य और उपनिवेशवाद' को कई किश्तों में प्रकाशित किया था। 'झारखंड की समरगाथा' इसी उदग्र चेतना का उत्तर विकास है। सचमुच यह झारखंड की समरगाथा है। समरगाथा यानी महाभारत। आल झारखंड स्टूडेंट्स यूनियन के संस्थापक महासचिव श्री सूर्य सिंह बेसरा की सहमति से महतोजी ने इस पुस्तक को यह सार्थक नाम दिया है। वैसे *शैलेन्द्र महतो को 'झारखंड का व्यास'* कहा जा सकता है। उन्होंने झारखंड की संघर्ष-गाथा और उसके शहीदों को लगभग उसी तेवर में चित्रांकित किया है। ऐसे प्रसंगों को पूरी प्रामाणिकता के साथ, सुसंगत क्रम में प्रस्तुत करना गहरी निष्ठा और श्रम का अवदान है। कुल मिलाकर झारखंड राज्य गठन होने तक की समरगाथा इसमें बखूबी दर्ज है।

राँची
15 फरवरी, 2015

डॉ. विसेश्वर प्रसाद केशरी
झारखंड मामलों के विशेषज्ञ
प्रोफेसर (रि.), जनजाति एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग,
राँची विश्वविद्यालय

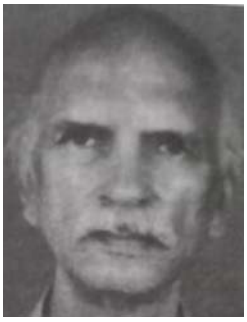

झारखंड ज्ञानकोष

'झारखंड की समरगाथा' में शैलेन्द्र महतो ने झारखंड के लोगों और झारखंड आंदोलन के बारे में काफी कुछ लिखा है और बहुत-सी जानकारियाँ दी हैं। इससे प्रभावित होकर डॉ. रामदयाल मुंडा ने पुस्तक की प्रस्तावना में पुस्तक को झारखंड ज्ञानकोष की संज्ञा दे दी है।

पुस्तक की एक बड़ी विशेषता यह है कि लेखक खुद झारखंड आंदोलन के साथ सक्रिय रूप से जुड़े रहे हैं और यह जुड़ाव लेखन को धारदार बना देता है। 1969-70 में अपने स्कूली पढ़ाई के दौरान चक्रधरपुर के ग्रामांचल में बीड़ी मजदूर आंदोलन से प्रभावित और प्रेरित होकर श्री महतो जनान्दोलन और फिर राजनीतिक आंदोलन से जुड़े। वे 1978 में झारखंड मुक्ति मोर्चा में शामिल हुए और दो बार जमशेदपुर से झामुमो के सांसद भी रहे। इस पृष्ठभूमि में उनको झारखंड आंदोलन को नजदीक से देखने और महसूस करने का मौका मिला। पेशेवर लेखक नहीं होने पर भी लेखन में उनकी दिलचस्पी शुरू से रही। पुस्तक को देखने से किसी को भी यह जरूर लगेगा कि कितनी मेहनत से इतनी सारी सामग्री जुटाई होगी। झारखंड और झारखंड आंदोलन पर किताबें तो बहुत लिखी गयी हैं, पर इस पुस्तक में कुछ विशेष पहलुओं पर दी गयी विस्तृत जानकारी और आंदोलन से जुड़े व्यक्ति का पूर्वाग्रह इसे दूसरी पुस्तकों से अलग बनाता है।

सरजोम सकम पत्रिका में प्रकाशित (राँची)
जनवरी, 2012

सीताराम शास्त्री
झारखंड आंदोलन के चिन्तक एवं बौद्धिक नेता

झारखंड की समरगाथा

शैलेन्द्र महतो

अनुज्ञा

वैधानिक चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन, फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक व प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित आलेख/आलेखों के सर्वाधिकार मूल रचनाकार/रचनाकारों के पास सुरक्षित हैं। पुस्तक में व्यक्त विचार पूर्णतया लेखक/लेखकों अथवा संपादक/संपादकों के हैं। यह जरूरी नहीं है कि प्रकाशक इन विचारों से पूर्ण या आंशिक रूप से सहमति रखे। किसी भी विवाद के लिए न्यायालय, दिल्ली ही मान्य होगा।

© लेखक

तृतीय संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण : 2023
प्रथम अनुज्ञा संस्करण : 2023
संशोधित संस्करण : 2025

ISBN 978-93-95380-60-7

प्रकाशक
अनुज्ञा बुक्स
1/10206, लेन नं. 1E, वेस्ट गोरख पार्क, शाहदरा, दिल्ली-110 032
e-mail : anuugyabooks@gmail.com • salesanuugyabooks@gmail.com
फोन : 011-22825424, 7291920186, 09350809192
www : anuugyabooks.com

आवरण
विश्वजीत महतो

मुद्रक
अर्पित प्रिंटोग्राफर्स, दिल्ली-32

JHARKHAND KEE SAMARGATHA
Critical Analysis of Making of the Jharkhand State *by Shailendra Mahto*

समर्पण

झारखंड राज्य निर्माण में हुए शहीदों, आंदोलनकारी जनता
और नेताओं को समर्पित

झारखंड आंदोलन के योद्धा

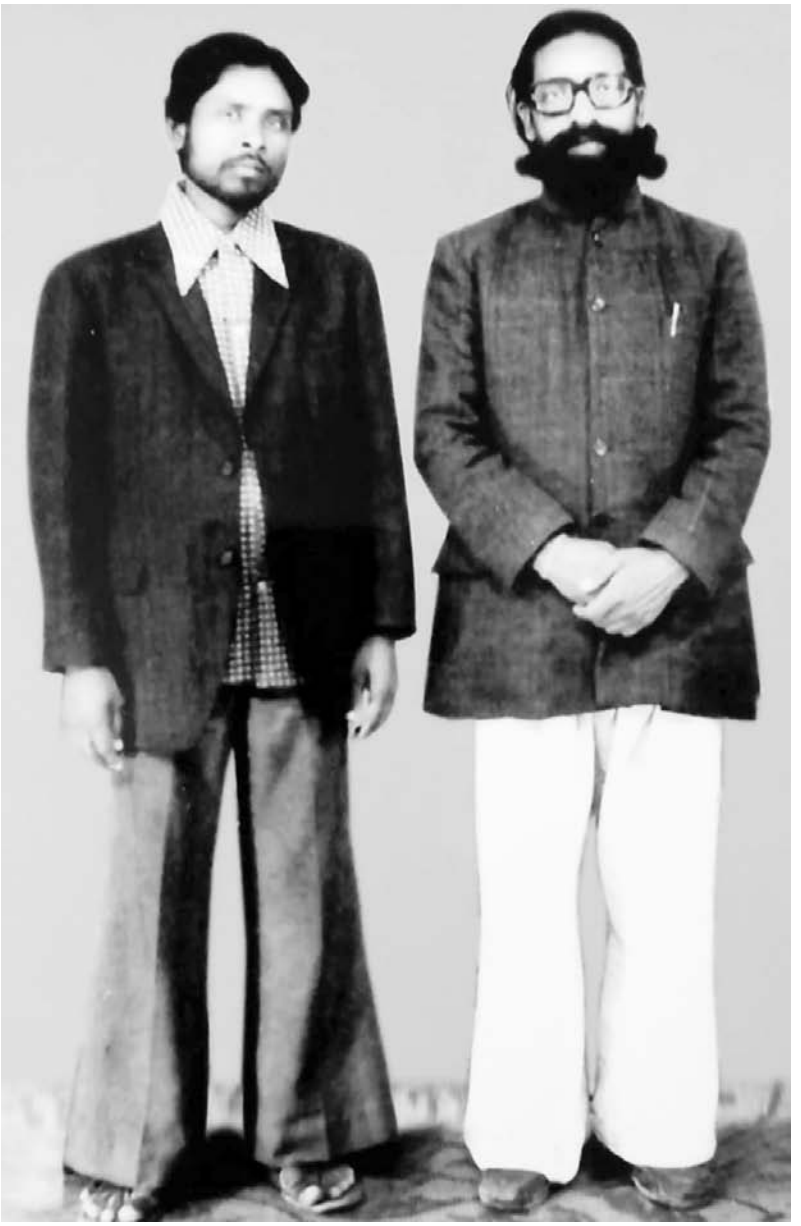

शिबू सोरेन (चश्मा पहने हुए) और शैलेन्द्र महतो
यह चित्र 1978 का है, जब झारखंड आन्दोलन शिखर पर था